REVIEW OF RESEARCH

सूफी संगीत की प्रमुख गायन शैलियां

Tajinder Singh

Research Scholar , Maharishi Dayanand University, Rohtak and Former Assistant Professor, L.P.U Phagwara, Punjab.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

प्रस्तावना :—

सूफी परम्परा मूलत: प्रेम पर आधातिर थी। प्रेम ही इस परम्परा का मूल सिद्धांत रहा है। इस परम्परा में प्रेम को 'इश्क' की संज्ञा से अभिहित किया गया है। 'इश्क' के दो प्रकार बताए गए हैं :- इश्क-ए-मिज़ाजी (सांसारिक प्रेम) और इश्क-ए-हकीकी (ईश्वरीय प्रेम)। इश्क-ए-मिज़ाजी के माध्यम से इश्क-ए-हकीकी तक पहुंचने के लिए सूफी परम्परा अनुमोदन करती है। प्रेम का मूल है शृंगार रस और शृंगार रस की अभिव्यंजना के लिए सबसे पहली जो चीज सामने आती है वो है साहित्य अथवा काव्य।

सूफियों ने उत्तम दर्जे की काव्य रचनाएं लिखीं तथा उसे संगीत के माध्यम से साधारण लोगों तक तक पहुंचाया।

इस शोध पत्र में सूफी संगीत की कुछ प्रमुख गायन शैलियों का वर्णन किया जा रहा है I जो इस प्रकार है कव्वाली,सूफी,गज़ल, हमद-ओ-सनाअ,नाअत तथा मसनवी I

Key words – सूफी, संगीत, कव्वाली,सूफी,गज़ल, हमद-ओ-सनाअ,नाअत तथा मसनवी I

कव्वाली

कव्वाली का साधारण अर्थ है सूफियाना नगमा एवं गीत। इसके लिए पारिभाषिक शब्द 'नगमा-एक-हक्कानी' अर्थात खुदा की इबादत एवं मोहम्मद से ओत-प्रोत गीत।[1] अरबी भाषा में साधारणत: आम गायक के लिए भी कव्वाल शब्द का प्रयोग किया जाता है परंतु इसके अतिरिक्त अन्य देशों में कव्वाली का गायन करने वाले गायकों को ही कव्वाल कहा जाता है।

अधिकतर विद्वानों का यह मत है कि 'कव्वाली' अरबी भाषा के शब्द 'कौल' से उत्पत्ति हुई है। कौल शब्द का अर्थ है कथन, वचन, बात, प्रवचन इत्यादि। राम आश्रय मिश्र लिखते हैं कि काक +अली = काकली" जिसका शाब्दिक अर्थ है कौवों का झुंड होता है। ऐसा माना जाता है कि कव्वाली का उद्गम इसी से ही हुआ है लेकिन विकास क्रम के अनुसार इसमें कुछ परिवर्तन हुआ। पंछियों में कौवा सबसे चालाक पंछी माना जाता है तथा संगीत की दुनिया में मानव समाज का वह गायक समूह जो वाचाल हो, कव्वाल कहलाए, हाजिर जवाबी तथा शेयरों के माध्यम से अपनी कही बात को मनवाने के कारण उनकी लोकप्रियता के साथ-साथ उनके द्वारा गाई गई कव्वाली

गायन का भी प्रचार बढ़ता गया।[2] इसी संदर्भ में बाल कृष्ण गर्ग का कहना है कि क्लब के प्रति समर्पण की भावना ने 'कौल' को जन्म दिया तथा कौल को गाने वाले 'कव्वाल' कहलाए। कव्वालों की गायन शैलियां होने के कारण कौल को 'कव्वाली' कहा जाने लगा।[3]

आचार्य बृहस्पति जी लिखते हैं कि कौल तथा कव्वाली शब्द इक्षहदी व्याकरण के अनुसार ही बने हैं। किसी भी अरबी तथा फारसी शब्द कोष में कव्वाली शब्द नहीं मिलता।[4] परंतु श्री वी.के स्वामी का कथन आचार्य बृहस्पति जी के कथन के विपरीत है। यह लिखते हैं कि 'कौल' शब्द अरबी भाषा का शब्द है परंतु कव्वाली शब्द शुद्ध 'उर्दू' भाषा है। कव्वाली का जन्म तक हुआ जब उर्दू अलग-अलग भाषाओं के शब्द एकत्रित करके अपना विकास कर रही थी परंतु उर्दू हिन्दी कोष में कव्वाली को अरबी भाषा का लफ्ज़ बताया गया है, जिसका अर्थ है इस्लामिक मजारों आदि पर गाए जाने वाले हक्कानी गीत।

कव्वाली गायन परम्परा का इस्लामिक देश ईरान से सूफी-फकीरों के माध्यम से भारत में आगमन हुआ है परंतु इसकी गायन विधि के बारे में कुछ निश्चित रूप में नहीं कहा जा सकता क्योंकि जिस समय कव्वाली गायन का प्रारंभ हुआ था, उस वक्त संगीत की स्वर लिपि का विकास नहीं हुआ था।

सूफी गज़ल

गज़ल फारसी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है प्रेम प्रधान गीत। इसकी उत्पत्ति फारस के लोक संगीत से हुई है तथा इसका प्रसार अरब, मिस्त्र एवं इक्षहदुस्तान आदि देशों में अधिक हुआ। फारस के मुस्लमान हमलावर जब इक्षहदुस्तान आए तब उनके साथ उनकी संस्कृति तथा भाषा भी आई। गज़ल इसी फारसी संगीत की पैदाइश है। गज़ल भारतीय संगीत को सूफियों की देन है।[5] इस शैली का प्रचार करने में सूफी संतों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सूफियों ने फारस की गज़ल शैली को खुदा इबादत के रूप में अपनाया तथा हिंदुस्तानी रागों एवं तालों में बांधकर प्रस्तुत किया। गज़ल का प्रसार तथा लोकप्रियता सूफी खानगाहों के माध्यम से हुई है। उर्स (मेलों) के मौके पर 'कव्वाली' के रूप में गज़लों के द्वारा परमात्मा की स्तुति की जाती थी। गज़ल को मकबुलियत दिलवाने में हज़रत अमीर खुसरो का भी बहुत बड़ा योगदान है।

सूफी गायन परम्परा में गज़ल को एक रूहानियत भरी अदायगी के साथ पेश किया जाता है। जैसे आम गज़लों में ज्यादातर त्रदगार एवं करुण रस दिखाई देता है,उसी प्रकार सूफी गज़लों में आध्यत्मवाद का पक्ष अधिक रहता है। इसकी धुन भी एक खास अंदाज में बनाई जाती है, जिससे यह केवह मनोरंजक न होकर एक बंदगी हो जाए। इस लिहाज़ से सूफी गज़लों में पाकिस्तान की सूफी गायिका आबिदा परवीन का नाम विशेष तौर पर मकबूल है। इनके द्वारा गाई गई सभी सूफी गजलों में वो भी रंग मौजूद हैं जो तस्वुफ भरी गज़ल की गायकी में होने चाहिए। सूफियाना गज़लों में अधिकतर रबाब सरोद, सारंगी, डफ, तबला, ढोलक इत्यादि साज़ों का प्रयोग किया जाता है।

हमद-ओ-सनाअ

सूफी गायन में सबसे पहले कव्वाली के माध्यम से खुदा की तारीफ की जाती है, जिसका 'हमद अथवा हमद-ओ-सनाअ' कहा जाता है। किताब-उल-ता-रीफात के अनुसार कुरान मजीद के पहले अध्याय को भी हमद कहा जाता है।[6] हमद में खुदा की तारीफ के तीन तरीके बताए गए हैं।

1. अल-हमद-उल-कौली : जुबां से खुदा की प्रशंसा करना, उसके गुणगान करना, जिसने हमें बनाया है।
2. अल-हमद-उल-दिली : खुदा की मजर्ी के अनुसार शरीर के माध्यम से उसकी प्रशंसा करना।

3. अल-हमद-उल-हाली : दिल तथ रूह से खुदा की तारीफ करना।
उस्ताद नुसरत फतेह अली खां द्वारा गाई एक हमद इस प्रकार है

वहद हू ला इल्लाहा इल्ला हू
शम्स तबरेज गर खुदा तालबी
खुशबू खाना ला इल्लाहा-इल्लह हू"
कौन नैन का मसजूद है है तू
हर रौअ तेरी शाहीद है मश्रूद है तू
तेरी एक के लब पर है, तेरी हमद-ओ-सनाअ
हर सेज में हर साज़ में मौजूद है तू।।
तेरे ही नाम से हर इपत्दा है
तेरे ह नाम पर हर इंतहां है
तेरी हमद-ओ-सनाअ
अल हम दो इल्लाह
के तू मेरे मोहम्मद को खुदा है।।

नाअत

नाअत का अर्थ ऊदू इक्षहदी डिक्शनरी में हज़रत मोहम्मद साहिब की छंदवाद स्तुति बताया गया है तथा पंजाबी सूफी साहित्य संदर्भ ग्रंथ में लिखा है तारीफ सिफत विशेष तौर पर हज़रत मोहम्मद साहिब के गुणगान के लिए यह शब्द निश्चित हो गया है अर्थात नाअत रसूल मकबूल (पैगम्बर प्यारे की की तारीफ) इस प्रकार यह एक अरबी भाषाई शब्छ है, जिसका कोषगत अर्थ सिफत,तारीफ,शोभा एवं कीर्ति आदि है।[7]
उर्दू, फारसी तथा अरबी की उन सभी रचनाओं को नाअत में शामिल किया जाता है, जिनमें आमतौर पर अल्लाह पाक की स्तुति का गायन किया गया हो। पंजाबी भाषा के 'शब्द' तथा हिन्दी भाषा के 'भजन' के तरह की 'नाअत ' अरबी 'भाषा' में एक प्रकार का धा्मक गीत है। आधुनिक समय में यह अरबी के अतिरिक्त हिन्दी, पंजाबी तथा उर्दू में भी लिखा तथा गाया जाता है।

नाअत में हज़रत सल-अल्लाह-अल्लाहे-वस्लम की विशेष तौर पर तारीफ की जाती है। पंजाबी साहित्य कोष में लिखा गया है कि मुस्लमान देशों में तथा इस्लामी धा्मक समूह, मजलिसों तथा अरदास आदि में 'नाअत' गाए जाने का रिवाज़ है।[8]

कव्वाली की महफिल में सबसे पहले हमद-ओ-सनाअ, फिर नाअत तथा उसके बाद कौल और कव्वाली गाई जाती है। नाअत को काव्य का एक रूप माना जाता है, जिसमें हज़रत 'सल-अल्लाह-अल्लाहे-वस्लम' की प्रशंसा होनी आवश्यक है, चाहे वह दोहा, कबित, रूबाई आदि किसी भी शकल में हो। शुरूआत में यह सिर्फ अरबी तथा फारसी जुबां में ही मिलते थे परंतु आज के समय में यह अरबी, फारसी के अलावा उर्दू, हिन्दी, पंजाबी तथा इक्षसधी आदि जुबानों में भी गाए जाते हैं।

मसनवी

फारसी साहित्य सबसे अधिक मसनवी में लिखा गया है। मसनवी अरबी जुबां का शब्द है परंतु यह फारसी अदब तथा शायरी का सबसे प्यारा काव्य रूप है। शुरूआत में मसनवी में कथा, काव्य, तारीखी घटना एवं किस्से कहानी इत्यादि लिखी गई परंतु फारसी के शायरों ने इसे काव्य तथा किस्साकारी तक सीमित न रखते हुए इसमें कुदरत का वर्णन, व्यक्ति के जज़्बों तथा तस्वुफ के फलसफे को भी अंकित किया। पंजाबी शायरों ने मनसवी का प्रयोग किस्सा-काव्य में अधिक किया है। साईं वारिफ शाह द्वारा लिखी गई हीर इसका सबसे उत्तर उदाहरण है।

अब्ल हमद खुदा दा विरद कीजे
इश्क कीता सू जग दा मूल मीयां
पहला आप खुदा ने इश्क कीता
ते माशूक है नबी रसूल मीयां।[9]

सबसे पहले मसनवी रूदकी की लिखी तथा इनको ही फारसी का सबसे पहला शायर भी कहा जाता है। इसके अलावा फिरदोसी, निज़ामी तथा मौलाना रूमी ने भी मसनवी लिखने में विशेष भूमिका अदा की है। इनमें से मौलाना रूमी की मसनवी सबसे अधिक लोकप्रिय हुई तथा इसको 'पहलवी का कुरान' भी कहा जाता है।

मसनवी की परिभाषाएं कुछ इस प्रकार हैं:-

1. अरबी-फारसी आदि भाषाओं को छंद जिसमें प्रत्येक दो पदों का अंत अनुपरास (तुकांत) होता है, इस छंद का लक्षण यह है कि इसमें आमतौर पर प्रतिचरण **19** मात्राएं तथा **12, 7, 6** पर विणराम होता है।[10]

2. उर्दू पद की एक किस्म जिसमें कहानी तथा उपदेश एक ही बार में दिया हो तथा उसका प्रत्येक शेयर दूसरे शेयर के साथ रदीफ-काफिए में मिलता है और प्रत्येक शेयर के दोनों मिसरे सनुपरास होते हों।[11]

3. मसनवी उस काव्य का नाम है, जिसमें दो-दो पद्य समान अनुपरास में चलते हों।[12]

ऊपर दी गई परिभाषाओं से यह पता वलता है कि मसनवी में गज़ल कसीदा या रूबाई की तरह काफिया व रदीफ जैसी कोई बंदिश नहीं होती। इतना आवश्यक है कि प्रत्येक शेयर तथा बैंत के दोनों मिसरे हम-काफिया हो।

बहुत सी मसनवी के आरंभ में खुदा की बंदगी, पीर-फकीरों की आराधना, वक्त के बादशाह की तारीफ तथा मसनवी लिखने का कारण भी लिखा जाता है। इस प्रकार मसनवी के अंत में शायद अपने निवास स्थान तथा मसनवी के राग, काल का जिक्र करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 राम आश्रय मिश्र, संगीत कव्वाली अंक (जनवरी-फरवरी 1970) पृ.15
2 बाल कृष्ण गर्ग, संगीत कव्वाली अंक (जनवरी-फरवरी 1970) पृ. 5
3 आचार्य बृहस्पति, संगीत कव्वाली अंक (जनवरी-फरवरी 1970) पृ. 18

4 मुहम्मद मुस्तफा खां मदाह, उर्दू-हिन्दी शब्द कोष, पृ. 109
5 संगीत गज़ल अंक, जनवरी-1967, पृ.15
6 मुहम्मद मुस्तफा खां मदाह, उर्दू हिन्दी शब्द कोष, पृ. 340
7 डा. गुरदेव इक्षसह, पंजाबी सूफी साहित्य संदर्भ ग्रंथ, पृ-211
8 पंजाबी साहित्य कोष, भाग-1, पृ. 313
9 सुरिन्द्र इक्षसह कोहली, पंजाबी साहित्य कोष, भाग-1 पृ. -390
10 डा. गुरदेव इक्षसह, पंजाबी सूफी साहित्य संदर्भ कोष, पृ.-286
11 मुहम्मद मुस्तफा खां मदाअ, उर्दू -हिन्दी कोष, पृ.-484
12 पंजाबी साहित्य कोष, भाग-1, पृ.-390

Tajinder Singh
Research Scholar , Maharishi Dayanand University, Rohtak and Former Assistant Professor, L.P.U Phagwara, Punjab.

LBP PUBLICATION